कलीसिया। परिशिष्ट 7

[कलीसिया और संस्कृति]

हमारे जीवित माता-पिता के साथ सम्बन्ध

प्रस्तावना। मसीहियों के पास परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुरूप अपने स्वयं के सांसारिक-दृष्टिकोण, विचार, सत्य, दृढ़ विश्वास, विश्वास, मूल्य, दृढ़-संकल्प, अनुभव, व्यवहार, सम्बन्ध और प्रशिक्षण को बदलने का ईश्वरीय उत्तरदायित्व है! इस शिक्षा में हम अपने जीवित माता-पिता के साथ सम्बन्धों पर विचार करेंगे।

क. माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का उत्तरदायित्व

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार, सन्तानों को कब तक अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए?

ध्यान दें।

1. बाइबल में आज्ञा।

पढ़ें इफिसियों 6:1-3 - परमेश्वर सन्तानों को दो उत्तरदायित्व देता है: अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना और उनका आदर करना।

संसार की कुछ संस्कृतियों में, सन्तानों को अपने पूरे जीवनकाल और सभी परिस्थितियों में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना सिखाया जाता है, भले ही वह परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध, स्वार्थी या विनाशकारी हों। उन संस्कृतियों में, माता-पिता के पास उनकी मृत्यु के समय तक अपनी सन्तानों पर पूर्ण अधिकार होता है, भले ही वे अविवाहित या विवाहित हों। इन मानवीय संस्कृतियों में "आज्ञाकारिता" की व्याख्या करने का यह तरीका बाइबल की ओर से नहीं है और इसे परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुरूप बदला जाना चाहिए।

2. यीशु का उदाहरण।

पढ़ें लूका 2:51; मरकुस 3:21,31-35; यूहन्ना 4:34 - जब यीशु बारह वर्ष का बालक ही था, वह पृथ्वी पर अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी था। हालाँकि, जब यीशु परिपक्व वयस्क बन गया और अपने जीवन में सेवकाई आरम्भ की, तो उसने अपने माता-पिता की आज्ञाओं का न तो पालन किया और न ही उनकी इच्छाओं को पूरा किया! यद्यपि यीशु अविवाहित रहा, फिर भी एक वयस्क के रूप में उसके पास अपने जीवन में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने का उत्तरदायित्व था। उसका कार्य परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना (यूहन्ना 4:34) और उनका पालन करना था, भले ही उसके माता-पिता इससे असहमत थे।

3. यीशु की शिक्षा।

पढ़ें मत्ती 10:37; 19:5 - जब कोई व्यक्ति बालक से वयस्क बनता है तो माता-पिता के साथ उसका सम्बन्ध भी बदल जाता है। एक व्यक्ति वयस्क कब बनता है?

- यीशु का उदाहरण दिखाता है कि जब एक अविवाहित व्यक्ति अपने जीवन में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य आरम्भ करता है, तब वह एक वयस्क बन जाता है।
- मत्ती 19:5 में यीशु की शिक्षा से पता चलता है कि जब कोई व्यक्ति विवाह करता है, तब वह वयस्क बन जाता है। तब उसे अपने पिता और माता को छोड़ना चाहिए और अपनी पत्नी के साथ एक नये परिवार का आरम्भ करना चाहिए। उसे अपने माता-पिता को भावनात्मक और आर्थिक रूप से छोड़ देना चाहिए। उसे अपने माता-पिता का अधिकार भी छोड़ना चाहिए। और, यदि संभव हो, तो उसे अपने माता-पिता के घर को भी छोड़ देना चाहिए (उनके घर में नहीं रहना चाहिए)।
- एक अविवाहित व्यक्ति के साथ-साथ विवाहित व्यक्ति के लिए, यीशु मत्ती 10:37 में कहता है, " जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह

मेरे योग्य नहीं।" यदि चुनाव आपके माता-पिता और यीशु मसीह के बीच में है, तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आपके माता-पिता की इच्छा कितनी प्रभावशाली है, आपको उसे नहीं मानना चाहिए। आपकी सर्वोच्च निष्ठा यीशु मसीह के प्रति है और कोई भी अन्य सम्बन्ध इसकी जगह नहीं ले सकता।

निष्कर्ष। बाइबल यह नहीं सिखाती कि मसीहियों को अपने पूरे जीवनकाल में या सभी परिस्थितियों में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए।[1] बजाय इसके, बाइबल हमें सिखाती है कि मसीहियों को तब तक अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए जब तक कि वे बालक हैं, जो कमज़ोर और अपरिपक्व हैं, जो अभी भी अपने माता-पिता पर निर्भर है, और केवल तब तक जब तक की उनके माता-पिता की इच्छाएँ परमेश्वर के वचन का उल्लंघन न करें (तुलना करें प्रेरितों के काम 5:29)।

मसीहियों के लिए वयस्कता की शुरूआत तब होती है:

- जब वे अपने माता-पिता के घर को पढ़ाई या काम करने के लिए छोड़ देते हैं
- जब वे अभी भी अपने माता-पिता के साथ रहते हैं, लेकिन उन पर निर्भर नहीं रहते हैं
- जब वे विवाह करते हैं।

वयस्कों के रूप में, मसीहियों के ऊपर अपने माता-पिता की आज्ञा-पालन करने का कोई दबाव नहीं होता। बाइबल सिखाती है कि मसीही हमेशा अपने पूरे जीवनकाल में और सभी परिस्थितियों में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के प्रति उत्तरदायी हैं। निष्कर्ष यह है कि अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारिता की एक सीमा होती है। बच्चो के पास केवल उसी समय तक अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का उत्तरदायित्व होता है, जब तक कि वह वयस्क न बन जाएँ।

अपने माता-पिता का आदर करने का उत्तरदायित्व

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार, लोग किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं?

ध्यान दें।

यद्यपि बच्चो को केवल तब तक अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए जब तक कि वे छोटे (नाबालिग) हैं, उन्हें हमेशा अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए, तब भी जब वे परिपक्व वयस्क बन चुके हों! "आदर" का अर्थ है : अत्यधिक सम्मान करना, बिना किसी विरोध, स्वार्थी उद्देश्यों या भय के बिना उनको महत्व देना और उनसे प्रेम करना।

निम्नलिखित पाँच उदाहरण सभी लोगों के लिए है जो इन सम्बन्धों के प्रति निभाने चाहिए :

- अपने माता-पिता के प्रति
- सास-ससुर के प्रति
- और अपने स्वर्गीय पिता के प्रति।

1. किसी भी प्रकार का झगड़ा और विवाद किये बिना अपने माता-पिता का आदर करें।

पढ़ें निर्गमन 21:15,17; रोमियों 13:4 - जब आप उन बातों के विषय में विवाद करते हैं जिनका कोई आत्मिक महत्व नहीं हैं, तो आप अपने माता-पिता का अनादर करते हैं। उदाहरण के लिए, कपड़ों के विषय में कि क्या पहनना है, किस टेलीविजन कार्यक्रम को देखना है, या बर्तन किसे धोने चाहिए, आदि के विषय में बहस न करें। अपने माता-पिता से बहस करते हुए आप अपने व्यवहार से उन्हें यह एहसास दिलाते हैं कि आप उनके दृष्टिकोण को हास्यास्पद मानते हैं।

आप सकारात्मक रूप से किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं? अपनी बातों या मामलों को जितना हो सके उतना दोस्ताना तरीके से बताएँ और उसके बाद परमेश्वर को कार्य करने दें ताकि उस कार्य से उसे सबसे ज़्यादा प्रसन्नता हो। यह साबित करता है कि आप यह मानते हैं कि परमेश्वर हर परिस्थिति को नियन्त्रित करता है। और यह भी कि परमेश्वर सब बातों या परिस्थितियों को इस तरह से बना रहा है जो आपके लिए सबसे उत्तम है।

---

[1]कन्फ्यूशियस ने भूमि के अधिकारी, शिक्षक और माता-पिता के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता सिखाई।

पढ़ें नीतिवचन 23:23 - जब आप अपने माता-पिता की सलाह सुनना भी नहीं चाहते तो आप उनका अनादर करते हैं।

2. आप अपने माता-पिता के सुझावों और सलाहों को गंभीरता से लेकर उनका आदर करते हैं।

आप सकारात्मक रूप से किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं? उनकी सलाह सुनें और बातों में उनकी अंतर्दृष्टि से सीखें। उनके कई वर्षों के अनुभव और उनके द्वारा एकत्रित किए गए ज्ञान से सीखें, जबकि आपके पास अभी भी अवसर है। विशेष रूप से उनकी सामर्थ्य, प्रतिभा, कौशल, ज्ञान और जानकारियों के क्षेत्रों से सीखें।

3. आप अपने माता-पिता को अपने वास्तविक जीवन में शामिल करके उनका आदर करते हैं।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 6:11-13 - जब आप उन्हें अपने विचारों, अपनी भावनाओं और अपने कार्यों के विषय में नहीं बताते हैं तो आप अपने माता-पिता का अनादर करते हैं। कुछ बच्चे असभ्य तरीके से अपने माता-पिता के सवालों का जवाब देते हैं, जैसे कि "ठीक है"

या "सब ठीक है" या "हमेशा की तरह"। जब आप उन्हें अपनी योजनाओं से दूर रखते हैं तो आप अपने माता-पिता का अनादर करते हैं और उन्हें आपकी योजनाओं पर किसी भी प्रकार का प्रभाव डालने का अवसर नहीं देते हैं। जब आप उन्हें अपनी ख़ुशी, दु:ख या दर्द साझा करने की अनुमति नहीं देते हैं तो आप अपने माता-पिता का अनादर करते हैं। जब आप अपने माता-पिता को अपने जीवन, निर्णय और विकल्पों से दूर रखते हैं, तो आप उन्हें बता रहे हैं कि वे इसी योग्य हैं!

आप सकारात्मक रूप से किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं? अपने माता-पिता से बात करें। अपने माता-पिता से बात करने की पहल करें। जो कुछ आप अपने विद्यालय या कार्य स्थल पर करते हैं, अपने मित्रों के साथ करते हैं और अपनी कलीसिया में करते हैं, उसके विषय में उनसे बात करें। विश्वास करने का अर्थ क्या है इसके विषय में उनसे बात करें; परमेश्वर और लोगों और संसार के विषय में उनसे बात करें। आपका मसीही दृढ़ विश्वास क्या हैं, आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं और क्या करते हैं, इनके विषय में उन्हें बताएँ। उन्हें अपनी योजनाओं और निर्णयों में शामिल करें। उनके विचारों, ज्ञान और अनुभवों का आदर करें। उन्हें सलाह और सुझाव देने के लिए कहें। भले ही आप उनकी सलाहों का पालन न कर पाएँ और उनकी इच्छाओं के खिरूद्ध कुछ करने का फैसला करते हैं, फिर भी आप उन्हें यह महसूस करवाएँ कि आपने उनकी सुनी हैं, उनकी सलाहों को गंभीरता से लिया हैं और जैसे वे हैं उन्हें वैसे ही स्वीकार कर लिया हैं।

4. आप अपने माता-पिता की देखभाल और सेवा करके उनका आदर करते हैं।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:4,8 - जब अपने माता-पिता के कहने के पश्चात ही आप उनकी सेवा करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। क्योंकि आपको लगता है कि हमेशा माता-पिता को ही पहल करनी चाहिए, आप किसी भी कार्य को करने से पहले बहुत लम्बे समय तक प्रतीक्षा करते हैं।

आप सकारात्मक रूप से किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं? यह जानने का अभ्यास करें कि आप उनकी सेवा कहाँ कर सकते हैं, और कहाँ किसी को आपकी सहायता की आवश्यकता है, या आप ऐसा कुछ कर सकते हैं जो कोई और करना नहीं चाहता या करने में सक्षम नहीं है। सेवा करने और सहायता करने की पहल करें और अपने माता-पिता को आपसे कहने की प्रतीक्षा न करें।

5. आप अपने माता-पिता से प्रेम करके उनका आदर करते हैं।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:4-8 - जब आप केवल सांस्कृतिक रूप से निर्धारित नियमों के अनुसार अपने माता-पिता से प्रेम करते हैं तब आप उनका अनादर करते हैं, जैसे कि सप्ताह में कम-से-कम एक बार उनसे मिलना, उन्हें उपहार देना और उनकी इच्छाओं को पूरा करना।

आप सकारात्मक रूप से किस प्रकार अपने माता-पिता का आदर करते हैं? वास्तविक मसीही प्रेम पवित्रता से परे चला जाता है जो कि उनके बच्चों की एक विशेष संस्कृति की मांग है! वास्तविक मसीही प्रेम आपके माता-पिता की कमियों में धीरज धरता है और जो कुछ उन्होंने आपके प्रति गलत किया है उसके लिए उन्हें क्षमा करता है। जब आप एक मसीही बन जाते हैं, तो आपके गैर-मसीही माता-पिता अक्सर इस बात से डरते हैं कि मसीह और बाइबल का आपके ऊपर बहुत नकारात्मक असर होगा। वे डरते हैं कि आप अपनी पढ़ाई में बहुत बुरा करेंगे, आपको कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, आपको जीवन में कोई सफलता नहीं मिलेगी, आप बहुत कम पैसे कमाएँगे और इस प्रकार आप बुढ़ापे में उनकी सहायता नहीं कर पाएँगे। उन्हें इस बात से डर लगता है कि आप अपनी संस्कृति खो देंगे, उनके देवताओं और धार्मिक अगुवों को क्रोधित कर देंगे और अपने पूरे परिवार को शर्मिन्दा कर देंगे। यही कारण है कि वे इस तथ्य पर बहुत नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं कि आप एक मसीही बन गए हैं और कुछ मामलों में उत्पीड़ित करते हैं और यहाँ तक कि आपको मार भी देते हैं। उन्हें एक कुशल तरीके से समझाएँ कि मसीही विश्वास क्या है और उनको यह साबित

करें कि इसके विपरीत यीशु मसीह ने आपके लिए जो कुछ किया है उसके माध्यम से आप एक अधिक ज़िम्मेदार और प्रेम से भरे हुए व्यक्ति बन गए हैं।